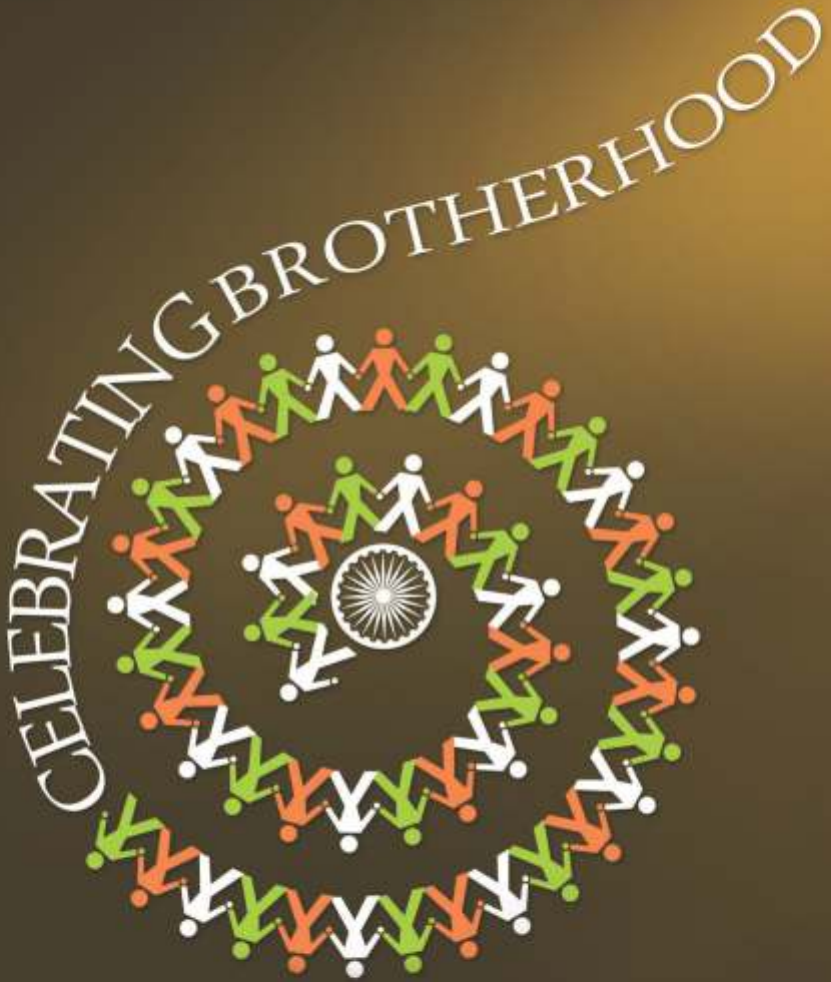

UNIVERSAL BROTHERHOOD DAY

11th September 2016

संकल्पना :

विश्व बन्धुत्व :

11 सितम्बर 1893 में धर्म संसद का आयोजन कोलम्बिया प्रदर्शनी के अन्तर्गत अमेरिका के शिकागो स्थित आर्ट इंस्टीट्यूट में किया गया था ।

संसद का शुभारम्भ विश्व के सभी धर्मों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में हुआ । हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म में निहित सहिष्णुता का सन्देश देते हुए धार्मिक कट्टरता को निर्मूल करने के आह्यावन से विश्व भर से आये हुए श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया । आगे के कुछ सप्ताहों में हजारों की संख्या में श्रोता स्वामी विवेकानन्द एवं अन्य वक्ताओं को सुनने आते रहे ऐसा प्रतीत होता था मानो सर्व धर्म की अमृत वर्षा हो रही हो ।

विश्व बन्धुत्व दिवस विवेकानन्द केन्द्र द्वारा स्वामी विवेकानन्द के शिकागो धर्म संसद में दिए गए ऐतिहासिक व्याख्यान के उपलक्ष्य में मनाया जाता है । वर्तमान परिस्थिति में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब सामाजिक अशांति एवं धर्मान्धता इस हद तक पहुँच चुकी है कि मानव सभ्यता का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है । अतः यह अति आवश्यक हो गया है कि वसुधैव कुटुम्बकं पर आधारित भारतीय धार्मिक सिद्धान्तों को पुर्नस्थापित किया जाये ।

11 सितम्बर 1893, रविवार को विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी की दिल्ली शाखा द्वारा 'विश्वबंधुत्व दिवस' का आयोजन किया जा रहा हैं ।

Concept

UNIVERSAL BROTHERHOOD :

11th of September 1893, Parliament of Religions was organised in conjunction with Columbian exposition at Art Institute of Chicago, USA.

The Parliament opened with international representatives of the world's religions present. Representing Hindu Dharma, Swami Vivekananda, riveted the audience with his call for religious tolerance and an end to fanaticism. Over the next several weeks, thousands of attendees came to hear Swami Vivekananda and other leaders, making the Parliament a watershed moment of interfaith dialogue.

'Universal Brotherhood Day' is celebrated by Vivekananda Kendra Kanyakumari to commemorate the epoch making speech of Swami Vivekananda at Chicago. This assumes more significance at a time when civil unrest and religious fundamentalism has evolved to a stage where it appears to be threatening the very existence of civil society. Hence, it has become a necessity to reassert the unparalleled synthesis that we call 'BHARAT'. The purpose of the event is to re-kindle the idea of Brotherhood and make it a part of everyday living.

On 11th of September 2016 (Sunday) Vivekananda Kendra Kanyakumari, Delhi Branch is organising a public event to celebrate 'Universal Brotherhood'

विश्व बंधुत्व उत्सव :

11 सितम्बर 2016 को हम शिकागो में आयोजित धर्म संसद में 1893 में दिए गये स्वामी विवेकानन्द के उस ऐतिहासिक व्याख्यान के स्मरण में विश्व बंधुत्व दिवस का कार्यक्रम मना रहे हैं । इस कार्यक्रम को दो चरणों में सुबह 7.30 से दोपहर 12.30 तक मनाया जायेगा ।

प्रथम चरण में रैली तालकटोरा स्टेडियम से प्रारम्भ होकर कालीबाड़ी मार्ग –आर.एम.एल गोल चक्कर – बाबा खड़क सिंह मार्ग – तालकटोरा मार्ग से वापिस तालकटोरा स्टेडियम पहुचेगी । इस दौड़ में सभी आयु वर्ग के लोग अपनी अपनी क्षमतानुसार भाग लेंगे । इस दौड़ का उद्देश्य बंधुत्व भाव को पुनर्जागृत करना तथा इसे दैनिक जीवन का अंग बनाना है ।

दूसरा चरण तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में होगा । इस कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक शांति पाठ से होगा । तदोपरांत महाविद्यालयों के विद्यार्थियों द्वारा लघु नाटिका का मंचन किया जायेगा । उसके बाद प्रख्यात वक्ताओं व अतिथियों द्वारा विश्व बंधुत्व पर विचार प्रस्तुत किया जायेगा । कार्यक्रम के अन्त में बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री सत्य नारायण मौरिया, जो कि उनके प्रशंसकों द्वारा 'बाबा' के नाम से जाने जाते हैं, द्वारा एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जायेगा । बाबा ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा से युक्त एक कवि, गायक, वक्ता तथा चित्रकार हैं और वे अपनी इन कलाओं के अद्भुत मिश्रण के द्वारा जनता में राष्ट्रीयता की भावना के जागरण का कार्य अथक रूप से कर रहे हैं ।

कार्यक्रम स्थल पर साहित्य, स्मारिका तथा खान पान आदि की दुकानों की व्यवस्था भी होगी ।

The Celebration of Brotherhood :

On the 11 th of September 2016, we shall celebrate Universal Brotherhood Day in remembrance of the epoch making speech of Swami Vivekananda delivered at "Parliament of Religions" at Chicago in 1893. The celebration of Universal Brotherhood would be a two pronged event, scheduled from 7:30 am to 12:30 pm.

The first event would be in the form of a rally commencing from Talkatora Stadium and passing through Kalibari Marg-Mandir Marg - RML roundabout - Baba Kharak Singh Marg-Talkatora Road, back to Talkatora Stadium. In this Run cum rally people of all age groups would take part and walk or run as per their convenience.

The second event is in the Talkatora indoor Stadium, the event would start with Vedic chants followed by skit presentation by college students. This would be followed by deliberations of some eminent persons on universal brotherhood. The event would conclude with the performance of a versatile artist Shri Satyanarayan Mouriya, popularly called as 'baba' by his admirers. Baba, a gifted poet, singer, orator & a painter, blends all these mediums in a unique way to bring about a National awakening in the masses.

At the venue we shall have stalls offering literature, souvenirs & eateries, etc.

स्वामी विवेकानंदजी का सम्बोधन (शिकागो, 11 सितम्बर 1893)

अमेरिकावासी बहनों तथा भाइयों !

आपने जिस सौहार्द और स्नेह के साथ हम लोगों का स्वागत किया है उसके प्रति आभार प्रकट करने के निमित्त खड़े होते समय मेरा हृदय अवर्णनीय हर्ष से अभिभूत हो रहा है। संसार में संन्यासियों की सब से प्राचीन परम्परा की ओर से मैं आपको धन्यवाद देता हूँ । धर्मों की जननी की ओर से धन्यवाद देता हूँ और कोटि–कोटि हिंदुओं के सभी संप्रदायों एवं मतों की ओर से भी धन्यवाद देता हूँ।

मैं इस मंच पर से बोलनेवाले उन कतिपय वक्ताओं के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने पूर्वी देशों से आये प्रतिनिधियों का उल्लेख करते समय आपको यह बतलाया है कि सुदूर देशों के ये लोग सहिष्णुता का भाव विविध देशों में प्रचारित करने के गौरव का दावा कर सकते हैं। मैं एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौमिक स्वीकारिता, दोनों की ही शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानते हैं। मुझे ऐसे देश का नागरिक होने का गर्व है जिसने इस पृथ्वी के विभिन्न धर्मों और देशों से आये हुए उत्पीड़ितों एवं शरणार्थियों को आश्रय दिया है। मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने हृदय में यहूदियों के पवित्रतम उत्तरजीवियों को स्थान दिया जब उनका पवित्र मंदिर रोमन अत्याचारों से धूल में मिला दिया गया था और उन्होंने दक्षिण भारत में आकर शरण ली थी । ऐसे धर्म का अनुयायी होने में, मैं गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने महान् जोराष्ट्रिन उत्तरजीवियों को शरण दी और जिसका सम्पोषण अब तक कर रहा है। भाईयो ! मैं आप लोगों को एक स्तोत्र की कुछ पंक्तियाँ सुनाता हूँ जिसको मैं बचपन से दोहराता आ रहा हूँ और जिसकी आवृति प्रतिदिन लाखों मनुष्य किया करते हैं ।

रुचिनां वैचित्र्याट्टजुकुटिलनानापथजुशाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।

"जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न–भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं उसी प्रकार हे प्रभो! भिन्न भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े–मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अंत में तुझमें ही आकर मिल जाते हैं।"

यह सभा जो अभी तक आयोजित सर्वश्रेष्ठ पवित्र सम्मेलनों में से एक है । स्वतः ही गीता के इस अद्‌भुत उपदेश का प्रतिपादन एवं जगत् के प्रति उसकी घोषणा है ।

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुश्याः पार्थ सर्वशः।।

"जो कोई मेरी ओर आता है, चाहे किसी प्रकार से हो, मैं उसको प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न भिन्न मार्गों द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ही ओर आते हैं।"

सांप्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स उत्पत्ति, धर्मांधता इस सुंदर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। वह पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है, उसको बारंबार मानवता के रक्त से नहलाती रही है, सभ्यताओं को विध्वस्त करती रही है और पूरे के पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही है। यदि ये वीभत्स दानव न होते तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर अब उनके अन्त का समय आ गया है और मैं अन्तर्मन से आशा करता हूँ कि आज सुबह इस सभा के सम्मान में जो घंटाध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मांधता का, तलवार या लेखनी के द्वारा होनेवाले सभी उत्पीड़नों का, तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होनेवाले मानवों की पारस्परिक कटुता का मृत्युनिनाद सिद्ध हो।

Sisters and Brothers of America,

It fills my heart with joy unspeakable to rise in response to the warm and cordial welcome which you have given us. I thank you in the name of the most ancient order of monks in the world; I thank you in the name of the mother of religions; and I thank you in the name of millions and millions of Hindu people of all classes and sects.

My thanks, also, to some of the speakers on this platform who, referring to the delegates from the Orient, have told you that these men from far-off nations may well claim the honour of bearing to different lands the idea of toleration. I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance. We believe not only in universal toleration, but we accept all religions as true. I am proud to belong to a nation which has sheltered the persecuted and the refugees of all religions and all nations of the earth. I am proud to tell you that we have gathered in our bosom the purest remnant of the Israelites, who came to Southern India and took refuge with us in the very year in which their holy temple was shattered to pieces by Roman tyranny. I am proud to belong to the religion which has sheltered and is still fostering the remnant of the grand Zoroastrian nation. I will quote to you, brethren, a few lines from a hymn which I remember to have repeated from my earliest boyhood, which is every day repeated by millions of human beings: "As the different streams having their sources in different places all mingle their water in the sea, so, O Lord, the different paths which men take through different tendencies, various though they appear, crooked or straight, all lead to Thee."

The present convention, which is one of the most august assemblies ever held, is in itself a vindication, a declaration to the world of the wonderful doctrine preached in the Gita: "Whosoever comes to Me, through whatsoever form, I reach him; all men are struggling through paths which in the end lead to me." Sectarianism, bigotry, and its horrible descendant, fanaticism, have long possessed this beautiful earth. They have filled the earth with violence, drenched it often and often with human blood, destroyed civilisation and sent whole nations to despair. Had it not been for these horrible demons, human society would be far more advanced than it is now. But their time is come; and I fervently hope that the bell that tolled this morning in honour of this convention may be the death - knell of all fanaticism, of all persecutions with the sword or with the pen, and of all uncharitable feelings between persons wending their way to the same goal.

VIVEKANANDA ROCK MEMORIAL

VIVEKANANDA KENDRA, KANAYAKUMARI
Branch Delhi :
3 - San Martin Marg, Chanakya Puri
New Delhi-110021

Head Quarter
Vivekananda Kendra
Vivekanandapuram, Kanyakumari-629702
Phone:04652 247012 Fax:04652 247177
Email: info@vkendra.org
www.vkendra.org

RSVP:
YAJIN BHATT
9899901907